International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-06-2026, Accepted: 01-07-2026, Published: 16-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 12-13

बघेली गाथाओं में रंगमंचीय सम्भावनाएँ

अंकुश सिंह चौहान[1], डॉ. सुरेंद्र बहादुर सिंह चौहान[2]
[1] शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह वि. वि. रीवा, मध्यप्रदेश, भारत
[2] शोध–निर्देशक, पूर्व प्राचार्य (सेवा नृवित्त) शास. कन्या महाविद्यालय सीधी, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध में बघेली लोक साहित्य की कोहरौहीं, बसदेवा, अहीर गाथाएँ, सूरगेनी, चंदनुआ, मदाइन गंगा, रेवा–परेवा, नल दमयंती, राजा हरिश्चन्द्र, चदैनी, रानी साहुरंगा, रानी केतकी, श्रवण कुमार, पदुम कंधइया, राजा कर्ण, बबी कुंतिमा, आदि गाथा–गायन परंपराओ का अध्ययन नाटकीय सम्भावनाओं और बघेली नाट्य शैली को गहरे जाँचने परखने और उसे बोली के रंगमंच मे नवाचार स्थापित करने की दृष्टि से किया जाना चाहिए। इस आलेख में बघेली के कुछ महत्वपूर्ण गाथा गायन परंपराओं में नाटकीय तत्वों की उपस्थिति के दृष्टिगत बघेली गाथाओं में रंगमंचीय संभावनाओं पर अध्ययन किया जाना है।

मूल शब्दः बघेली गाथा गायन और लोकनाट्य, गाथाओं में नाटकीय तत्व, गाथा गायक व अभिनेता, बघेली लोक नाट्य और गाथाओं का अंतर्सम्बंध

भारतीय लोक साहित्य में निश्चित ही क्षेत्र, भाषा व जातीय आधार पर तमाम तरह की पौराणिक, ऐतिहासिक तथा लोक नायक संबंधित गाथाओं के गायन, प्रदर्शन का चलन हजारों वर्षों से है । उसी तरह बघेली में गाई जाने वाली तमाम गाथा गायन रूपों को हम शैलीगत आधार पर निम्न भागों में बांट सकते हैं –

बसदेवा गाथा गायन – मध्यप्रदेश के रीवा, सीधी, सतना, बैकुण्ठपुर, मऊगंज, सागर, दमोह आदि जिलों में बासदेव तथा हरबोले नाम की जातियां तिवासरत हैं। यह जातियां अपनी जातीय गाथा गायकी बसदेवा (जातिगत नाम) तथा हरबोले नाम से अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति को विभिन्न पौराणिक, ऐतिहासिक नायकों की कथाओं को गाथा गायन शैली के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इनके द्वारा गाई जा रही गाथा गायन शैली में मुख्य रूप से राजा हरिश्चंद्र, नल दमयन्ती, राजा कर्ण, दुर्योधन, श्रवण कुमार आदि पौराणिक चरित्रों की उपस्थिति है। यह अपनी जातिगत परम्परा व मान्यता के आधार पर भोर के वक्त इन गाथाओं को घर घर जाकर सुनाते रहे हैं। इनके द्वारा गाई जा रही गाथाओं में वस्त्र विन्यास से लेकर चरित्रों के नाटकीय अंदाज में प्रस्तुत करने की प्रस्तुति प्रक्रिया उल्लेखनीय है। यह रंगकर्मियों के लिए निश्चित ही अभिनय के गुर सिखाती है। यह कलाकार जब श्रवण कुमार की कथा कहते हैं तो कई जगहों पर वह गाथा में आए विविध नायकों को रंगमंच के पात्र पाठ की तरह प्रस्तुत करते हैं। कई जगह आपको लगता है कि आप नाट्य मंचन देख रहे हैं । शायद यही कारण है कि वर्षों वर्ष तक लोग इस गाथा शैली के मुरीद रहे और सा दर साल उस तन्मयता के साथ सुनते रहे हैं। बघेली रंगमंच के क्षेत्र कार्य करने वाले नाट्य निर्देशकों, नाट्य लेखकों को गाथा गायन रूप में उपस्थित नाटय तत्वों का अपने नाटकों में प्रयोग तो करना ही चाहिए साथ ही इन गाथाओं को स्वंतत्र रूप से मंचीय प्रदर्शन हेतु तैयार किया जाना चाहिए और इन्हें प्रचारित प्रसारित करना चाहिए।

कोहरौंही गाथा गायन – विशेषकर विंध्य क्षेत्र में निवासरत कुम्हार जाति द्वारा अपनी विशिष्ट शैली में गाई व कही जाने वाली विभिन्न नायकों की गाथाओं को कोहरौही कहा जाता है। यह गाथा गायन रंगमंचीय गतिविधि के काफी नजदीक है। इस गाथा अन्तर्गत कर्ण, बर्बरीक, एकलव्य, कुंती आदि चरित्रों की कथा गाई जाती है। इनमें उपस्थित संवाद, गति, लय, आंगिक गति और नाट्य की प्रतिरोधी परम्परा को एकलव्य की कथा से समझते हैं – एक बघेली लोक में दर्जनों कथाएँ हैं जो बघेली चौपालों पर पारंपरिक रूप से सुनाई जाती रही हैं लेकिन इन्ही कथाओं में से एक कथा गुरू शिष्य परम्परा को बघेली समाज की दृष्टि से प्रस्तुत करती है। एकलव्य धनुर्विद्या सीखने के लिए हस्तिनापुर राज्य के प्रशिक्षण केन्द्र जाते हैं। जहाँ गुरु द्रोण सहित कौरव पांडव अभ्यास कर रहे हैं उसी समय एकलव्य आश्रम में पहुँचकर गुरू द्रोणाचार्य को प्रणाम कर उसे भी अपना शिष्य बना लेने की बात कहते हैं ।

एकलव्य के नीच जाति का होने के कारण द्रोणाचार्य उसे अपना शिष्य न बना पाने की बात कहीं। द्रोणाचार्य के मना करने के बाद एकलव्य उनकी मूर्ति को सामने रख अभ्यास करने लगता है । तभी एक दिन वह देखता है कि द्रोणाचार्य उसके समक्ष खड़े हैं। एकलव्य ने द्रोणाचार्य को दण्डवत प्रणाम किया और कहा कि – आप ही मेरे गुरू हैं। अब आप आ ही गए हैं तो मैं आपको गुरुदक्षिणा देना चहता हूँ। यह सुनकर द्रोण कि दृष्टि अर्जुन पर गई वो उनके समकक्ष हाथ जोड़ कर खड़ा था। उन्हें याद आया कि मेरे शुत्रु द्रोपद से बदला लेना है अर्जुन के श्रेष्ठ धनुधारी होने का वरदान मिथ्या नहीं किया जा सका। मेरा आस्तित्व मिट जाएगा। अच्छा त तू हमार शिष्य आहेऽ, त तोंहका निमयानुसार हमका गुरुदक्षिणउ देइ चाही। एकलव्य ने कहा – आज्ञा करी गुरुदेव ! द्रोण चुप थे वो अपने शिष्यों कि तरफ देख रहे थे। तब एकलव्य ने फिर कहा – गुरुदेव, अपना गुरुदक्षिणा मा हमार प्राणउ माँगि लेब तबउ हम ओकर अवज्ञा न करब। गुरु का पाबय के सुख अजुअय त जानेऽन। माँगी गुरुदेव। आजु अपना हमसे जउन मागब हम उआ देब। द्रोण ने पूछा– प्राणउ दइ सकतेऽ हएऽ एकलव्य ? एकलव्य ने कहा – हँय गुरुदेव, अपना माँगब त हम प्राणउ दइ देब ।

लोक यहाँ कहता है कि वहाँ खड़े लोक देवता ने एकलव्य को गुरुदक्षिणा न देने की बात कही उसने कहा कि –

देख त रे भला, अरे ई त द्रोण आहीं
देख त रे भला, राजा के जजमान अहीं
देख त रे भलाऽऽ देख त रे भला
कुछु न सिखाइन ये जी कुछु न पढ़ाइन पय एनखा चाही गुरुदक्षिणा
धउ उजबक चुप्प रहु सराप दय देइहीं
आय इया बभना पय ठाट रजबार कस ओहूँ म चाही गुरुदक्षिणा

धउ कुजनिस चुप्प रहु भसम कइ देइहीं
देख त रे भला, अरे ई त द्रोण आहीं
देख त रे भला, राजा के जजमान अहीं

एकलव्य के गुरुदक्षिणा में अँगूठा देने के बाद लोक ने द्रोण की खूब लानत मलामत कि उसने कहा कि – द्रोंणऽऽ, तू मानव नही मानव कि खाल में छिपा खुंखार भेड़िया है। यह तेरा नैतिक पतन है। यह पूरे हस्तिनापुर का नैतिक पतन है। जो अपने मित्र का न हुआ भला वो शिष्य का क्या होता ? अपने मित्र द्रुपद को तूने सत्ता के लोभ में अपमानित किया। अर्जुन तुझे क्या लगता है कि तू द्रोण का प्रिय शिष्य है ? यह तेरी भूल है। उसने तुझे मोहरा बनाया ताकि वो द्रुपद से बदला ले सके। वह गुरू नही सत्तालोभी है। वह हस्तिनापुर आया ही इसी लिए था उसे राजसुख चाहिए था। तूने अपने दम्भ को जीवित रखने के लिए एकलव्य का अगूँठा काटकर गुरू–शिष्य के रिश्ते को शर्मशार किया है। युगों–युगों तक आगे आने वाली मानव पीढ़िया तुझे कभी माफ़ नहीं करेंगी। अब से दुनिया में कोई एकलव्य पैदा नही होगा। गुरू और शिष्य के बीच का विश्वास हमेशा के लिए सूख जाएगा। तू जिस अर्जुन को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनता देखना चाहता है एक दिन वही अर्जुन तेरा हृदय विदीर्ण कर देगा ।

बघेली में इस तरह की दर्जनों गाथाएँ हैं जिनमें नाटकों की ही तरह संवाद हैं, गीत हैं, गति एवं चरित्रों की नाटकीय उपस्थिति है ।

निष्कर्ष

बघेलखण्ड क्षेत्र में जातिगत आधार पर भिन्न–भिन्न तरह की गाथा गायन शैलियाँ प्रचलन में हैं जो कि उस जातीय लोक विश्वास से गहरे जुड़ी हैं। लोक विश्वास बघेली जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो कि हमें विरासत में मिला है। धर्म हमारी संस्कृति का संजीवनी तत्व है और यह लोक विश्वास से निरंतर पुष्ट होता है। अनेक तरह के लोक विश्वासों के साथ बघेली लोक जीवन में ऐतिहासिक एवं पौराणिक चरित्रों का मूल पाठ से इतर लोक में लोक की आवश्यक्तानुसार रच–बस जाना लोक की सहज ग्राह्यता का प्रतीक है ।

कोहरौहीं, बसदेवा, चंदैनी, छाहुर आदि गाथा गायन परम्पराओं में कुम्हार, यादव, बासदेव, खैरवार, साकेत आदि जातियों की एक शैली विशेष है, जिसके अंतर्गत विभिन्न तरह के गाथाएँ गाई जाती हैं । यह परंपरा मूल रूप से गायकी प्रधान है परन्तु साथ ही साथ इसमे अभिनय पक्ष भी उतना ही मजबूत नजर आता है जितना की गायकी पक्ष। इसका मुख्य गायक गाते हुए अभिनय करता है । इसका कारण कही भी यह अरुचिपूर्ण या ऊबाऊ नहीं प्रतीत होता यह इसके प्रदर्शन पक्ष की विशेषता है ।

विंध्यक्षेत्र में पिछले एक दशक से सक्रिय नाट्य समूहों इंद्रवती नाट्य समिति सीधी, रंगदूत नाट्य समिति सीधी, अंगराग नाट्य एवं लोकरंग समिति लकोड़ा, मंडप आर्ट्स रीवा, एक्सट्रीम आर्ट एंड एजुकेशनल सोसाइटी सीधी, संप्रेषणा नाटय मंच कटनी, संपूर्ण नाट्य एवं लोक कला समिति शहडोल, संदेश नाट्य मंच उमरिया, रंग उत्सव नाट्य समिति, सघन भोपाल, लोकरंग समिति सतना, आदिरंग कला समूह शहडोल, आकार वेलफेयर सोसाइटी आदि संस्थाओं द्वारा पिछले कुछ वर्षों में बघेली बोली में निहित गाथाओं में चारित्रिक उपस्थिति को नाट्य रूप में प्रस्तुत किया जिनमें पौराणिक चरित्रों में कर्ण, एकलव्य, बर्बरीक, महाबली, बा लि, सीता, शम्बूक, नरकासुर, श्रवण कुमार, छाहुर, चदैनी, सोन रेवा, बसामन मामा, राजा हरिश्चंद्र आदि गाथाओं का नाट्य रूपांतरण कर देश भर के राष्ट्रीय नाटय व लोकरंग महोत्सवों में मंचित किया गया लेकिन स्वतंत्र से रूप से वर्षों से मौखिक परंपरा में रची बसी इन गाथाओं व उनके गायकों को राष्ट्रीय पहचान न मिल सकी द्य यह बघेलखण्ड क्षेत्र में गाई जाने वाली दर्जनों गाथा गायन शैलियों के लिए अच्छा संकेत नहीं है। उल्लेखनीय बात है कि इन गाथा गायन शैलियों लोक संचयिता द्वारा संकलित कर लिया गया है और आगे आने वाले दिनों में इन्हें प्रकाशित भी किया जायेगा लेकिन इनके मौलिक कलाकारों व शैली को पांडवानी तथा देश भर में ख्यातिलब्ध अन्य गाथाओं की ही तरह बघेली बोली के गाथाओं को भी मंचीय स्वरूप में लाने और उन्हें जन जन तक पहुंचाने के लिए यहां के रंगकर्मियों को आगे आना होगा।

संदर्भ

1. महाउर सीधी रंगमंच विशेषांक 2017, संपादक – नरेंद्र बहादुर सिंह, इंद्रवती नाट्य समिति सीधी, गोपालदास रोड दक्षिण करौंदिया जिला – सीधी (म.प्र.), प्रिंट 2017
2. शुक्ल, डॉ. भगवती प्रसाद – बघेली भाषा और साहित्य, उ. प्र. इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रा. लि., प्रिंट 1971
3. तिवारी, रमेश– व्यास आदर्श रामलीला मण्डली खजुरी, जिला– सीधी (म.प्र.)